इकाई 6 वाणिज्यिक से औद्योगिक पूंजीवाद की ओर बढ़ता यूरोप

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम 15वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक यूरोप में पनपी प्रमुख आर्थिक और सामाजिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यूरोप में सामंतवाद के कमजोर होने के कारणों का उल्लेख कर सकेंगे,
- यूरोप की अर्थव्यवस्था पर भौगोलिक खोजों, पारसमुद्री उपनिवेशीकरण के प्रभावों को रेखांकित कर सकेंगे,
- वाणिज्यवादी काल, बाजारों का उदय, मुद्रा अर्थव्यवस्था, पूंजी का जमाव और वाणिज्यवादी विचारों के प्रभाव पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- विज्ञान और तकनीक में विकास होने के साथ-साथ कृषि, उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों को समझा सकेंगे,
- यूरोपीय देशों के तुलनात्मक विकास का वर्णन कर सकेंगे,
- एक प्रमुख औपनिवेशिक शक्ति के रूप में इंग्लैंड के उदय का उल्लेख कर सकेंगे,
- ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति के कारण, स्वरूप और परिणाम पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- पूंजीवाद के उदय में उपनिवेशों की भूमिका समझा सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

खंड 7 में आप भारत में 18वीं सदी के दौरान, घटित राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस काल की उल्लेखनीय बात यह थी कि कई यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ भारतीय उपमहाद्वीप पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए एक दूसरे में होड़ लगा रही थीं। सवाल यह उठता है कि एक साथ इतने यूरोपीय देश उपनिवेश बनाने के लिए क्यों आतुर हो गये?

इस इकाई में हम इसी प्रश्न पर विचार कर रहे हैं और इस प्रश्न पर विचार करने के लिए 15वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप में हुए आर्थिक और सामाजिक बदलाव को समझना जरूरी है।

इस इकाई में हम यूरोप में सामंतवाद के पतन और नये विचारों के उदय, भौगोलिक खोजो, पारसमुद्रीय व्यापार और उपनिवेशीकरण पर विचार-विमर्श करेंगे। इस इकाई में हम व्यापारिक क्रांति और 17-18वीं शताब्दी में प्रभावशाली वाणिज्यवादी विचारों से आपको अवगत कराएंगे। इकाई के अंतिम हिस्से में हम औपनिवेशिक शक्ति के रूप में ब्रिटेन के उदय, औद्योगिक क्रांति और यूरोप में वाणिज्यिक पूंजीवाद से औद्योगिक पूंजीवाद के रूपांतरण पर प्रकाश डालेंगे।

6.2 सामंतवादी यूरोप

मध्ययुग की समाप्ति के साथ-साथ यूरोप में सामंती समाज का अस्तित्व भी संकट में पड़ गया। वहाँ लगभग एक हजार सालों से सामंतवाद स्थापित था। पाँचवीं शताब्दी में शक्तिशाली रोमन साम्राज्य के पतन के बाद राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक शक्तियाँ विकेंद्रित हो गयीं, राज्य और राजा के स्थान पर बिचौलिये शक्तिशाली हो गये। आने वाली शताब्दियों में सामंती समाज बिचौलियों के समाज में रूपांतरित हो गया, जहाँ बिचौलियों के कई स्तर स्थापित हो गये। ये बिचौलिए अपने मातहतों के सहारे जीते थे। अर्थव्यवस्था और समाज व्यवस्था प्रमुख रूप से भूमि और कृषि पर आधारित थी, व्यापार की भूमिका बहुत गौण थी। कृषि पर आधारित जनसंख्या में कृषिदासों (सर्फ्स) की संख्या सबसे ज्यादा थी। मालिक की सेवा इनका धर्म था। एक छोटे जमींदार के ऊपर दूसरा बड़ा जमींदार होता था। छोटा जमींदार बड़े जमींदार की जरूरतों को पूरा करता था।

इस प्रकार, सामंती समाज निर्भरता और परस्पर निर्भरता के बंधन में बंधा था : मजबूत कमजोर को अपना सेवक बनाता था और सेवक को संरक्षण प्रदान किया जाता था। वर्गों के बीच का संबंध विश्वास और संरक्षण से निर्धारित होता था।

इस युग में नाइट्स (knights), कुलीनों और राजाओं जैसे बड़े भूमिपतियों के जीवन मूल्य शौर्य और सम्मान पर आधारित थे। चर्च और उसके पुजारी शक्तिशाली थे और सामंती समाज पर उनका अच्छा खासा प्रभाव था।

चौदहवीं शताब्दी आते-आते सामंती समाज अपने उत्थान के उत्कर्ष पर था। बारहवीं शताब्दी से सामंती समाज में तकनीक, कृषीय उत्पादन, व्यापार वाणिज्य और जनसंख्या की वृद्धि हो रही थी। पर, एक सीमा तक पहुंचकर इस व्यवस्था ने विकास का मार्ग अवरुद्ध किया। 1000 ई. में जनसंख्या 385 लाख थी जो 14वीं शताब्दी में बढ़कर 735 लाख हो गयी। इतनी तेजी से तकनीकी और स्रोतों का विकास न हो सका और युद्धों की शृंखला और प्राकृतिक प्रकोप ने जनसंख्या की बाढ़ पर रोक लगायी। सन् 1348 ई. के बाद प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ और जनसंख्या में तेजी से कमी आयी। जनसंख्या की इस गिरावट के कारण लोग खेतों को छोड़कर भागने लगे और कृषीय उत्पादन में गिरावट आयी। परिणामस्वरूप, सामंती भूमिपतियों की आय में भी कमी आयी। इसकी प्रतिक्रिया में भूमिपतियों ने कृषिदासों पर अपना सामंती नियंत्रण और भी कस दिया। कृषिदासों ने इसका विरोध किया और 14वीं-15वीं शताब्दी के दौरान समूचे यूरोप में लगातार कई कृषक विद्रोह हुए। इनमें 1358 का फ्रांसीसी जेक्वेरे और 1381 का अंग्रेज कृषक विद्रोह उल्लेखनीय है।

इस प्रकार पश्चिमी यूरोप अर्थात् एल्ब नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित देश, जैसे इंग्लैंड, फ्रांस, हॉलैंड, स्पेन, जर्मनी के एक हिस्से और स्कैंडिनेविया के सामंती समाज का अस्तित्व संकट में पड़ गया। इस सामंती संकट के फलस्वरूप सामंती भूमिपतियों का प्रभाव कमजोर हुआ और कृषिदास की प्रथा कमजोर हुई। पूर्वी यूरोप, अर्थात् आज के पोलैंड, रूमानिया, हंगरी, यू.एस.एस.आर. आदि में भूमिपतियों ने कृषिदास प्रथा को फिर से लागू किया और 14वीं-15वीं शताब्दी के बाद यह प्रथा पुनः सुदृढ़ हो गयी। परिणामस्वरूप, पूर्वी यूरोप में सामंती प्रथा पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा अधिक दिनों तक जीवित रही। अगली तीन-चार शताब्दियों में व्यापार, उद्योग और नगरीकरण के क्षेत्र में पूर्वी यूरोप पश्चिमी

यूरोप से पिछड़ गया। आने वाले वर्षों में पूर्वी यूरोप ने पश्चिमी यूरोप को बने बनाये माल के बदले कृषि उत्पादों की आपूर्ति की। आगे हम यूरोप में होने वाली जिन गतिविधियों पर विचार-विमर्श करने जा रहे हैं, उससे हम पश्चिम यूरोप पर ही अपना ध्यान केंद्रित करेंगे।

6.3 नये विचार : पुनर्जागरण और सुधार

16वीं शताब्दी के आरंभ होते-होते यूरोप की सामंती व्यवस्था पर प्रश्न-चिह्न लग गया और इसमें कई प्रकार के सुधार हुए। संस्कृति और विचार के क्षेत्र में कई लेखकों, चित्रकारों, शिल्पियों और अन्य कलाकारों ने व्यक्ति और मानवता पर बार-बार जोर दिया। इनमें से अधिकांश कलाकारों/लेखकों ने प्राचीन संस्कृति या प्राचीन यूनान और रोम से प्रेरणा ग्रहण की और कई यूरोपीयवासियों ने व्यक्ति के शोषण और सामंतयुग की सामूहिक सत्ता को चुनौती दी। 14वीं शताब्दी में सामंती व्यवस्था के कमजोर पड़ने के साथ व्यक्तिवाद और मानवतावाद जैसे विचारों ने नये जीवन-मूल्य को सामने रखा। समग्र रूप से इसे Renaissance (पुनर्जागरण) के रूप if जाना जाता है। इतालवी भाषा में रेनेसा (Renaissance) का शब्दार्थ पुनर्जन्म है और मध्ययुग के बाद यूरोप if होने वाले परिवर्तनों के लिए इसका प्रयोग किया गया।

उत्तर मध्यकाल के दौरान, खासकर इटली में, विश्वविद्यालयों में पुनर्जागरण संबंधी विचारों का प्रस्फुटन हुआ और 16वीं शताब्दी के दौरान साहित्य और विभिन्न कलाओं में इसकी मुखर अभिव्यक्ति हुई। 1520 के दशक में मार्टिन लूथर और जॉन केल्विन जैसे सुधारकों ने क्रिश्चियन चर्च पर लगातार प्रहार किया। उन्होंने चर्च पर भ्रष्टाचार, दुरुपयोग और लोगों को गलत रास्ते पर ले जाने का आरोप लगाया। उन्होंने चर्च की यह कहकर भी आलोचना की कि यह ईसा मसीह और अन्य संतों के बताए गये मार्ग से भटक गया है। लूथर और कैल्विन दोनों ने अपने पृथक चर्च स्थापित किये।

इन चर्चों की ओर जर्मनी, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और उत्तरी सकैंडिनेवियन देशों के लोग आकृष्ट हुए। क्रिश्चियन चर्च पर यह आक्रमण और इसमें सुधार का प्रयास एक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ, जिसे सुधार आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

व्यापारियों, व्यवसायियों और बैंकरों के उदित हो रहे वर्ग से यूरोप का नया मध्यवर्ग निर्मित हुआ। यह वर्ग पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन से काफी प्रभावित हुआ। 14वीं-15वीं शताब्दी में सामंती के दौरान कृषि क्षेत्र में पूंजी लगाना कम फायदेमंद हो गया था, इसकी तुलना में व्यापार और वाणिज्य में अधिक फायदा था।

पुनर्जागरण के जन्मस्थान इटली के व्यापारी 11वीं-12वीं शताब्दी से ही यूरोप के देशों को कलात्मक और ऐयाशी के सामान निर्यात कर रहे थे। उसी समय से वे काफी सम्पन्न थे। इसमें इटली की भौगोलिक स्थिति भी सहायक थी, यह समुद्र से घिरा था और पूर्व की ओर जमीन के रास्ते से भी जुड़ा था। सन् 1500 ई. के आसपास इटली यूरोप का सबसे सम्पन्न देश था, जहाँ उस समय छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य और वेनिस, जेनेवा, मिलान, फ्लोरेंस आदि जैसे स्वायत्त व्यापारिक शहर विराजमान थे।

6.4 भौगोलिक खोजें और पारसमुद्रीय उपनिवेशीकरण

यूरोप के कई देश व्यापार के क्षेत्र में इटली के एकाधिकार को तोड़ना चाहते थे। 15वीं शताब्दी से ही अतलांतिक तट पर बसे देश अफ्रीका होकर पूर्व की ओर जाने का वैकल्पिक रास्ता खोज रहे थे। नये अनजाने स्थलों और नये समुद्री रास्तों की खोज में कई तत्व सहायक हुए।

- 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कई केंद्रीयकृत राज्यों और मजबूत राजाओं का उदय हुआ। उन्होंने भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहित किया। पुर्तगाल और स्पेन जैसे केंद्रीयकृत राज्यों ने इन खोजों को बढ़ावा दिया और खोजियों को वित्तीय सहायता भी प्रदान की।

- कंपास, ऐस्ट्रोलेब, बारूद आदि तकनीकी उपलब्धियों और सूचनाओं से खोजियों को काफी मदद मिली। 15वीं और 16वीं शताब्दियों में मुद्रण और नक्शा बनाने का काम तेजी से विकसित हुआ।
- पूर्व की समृद्धि की कहानियाँ, नयी जगहों पर ईसाई मत को फैलाने की इच्छा और सबसे बढ़कर नाम कमाने की इच्छा ने और खोजियों को प्रोत्साहित किया।

दूसरे शब्दों में धर्म, ख्याति और धर्म की इच्छा और रोमांच के मिजाज से यूरोप के खोजी प्रेरित थे। 1487 में, बार्थोलो दीयाज नाम का एक पुर्तगाली अफ्रीका के दक्षिणी सिरे तक पहुंच गया और इस जगह को केप ऑफ द गुड होप कहा गया। 1498 में वास्कोडिगामा भारत पहुंचा। इसी समय क्रिस्टोफर कोलंबस पूर्व के रास्ते की खोज में निकला। उसने अतलांतिक पार किया और अमेरिका नामक एक नये महादेश की खोज की।

1. विभिन्न प्रकार के कंपास

1530 के दशक में, पुर्तगाली और स्पैनिश खोजी न केवल आज के दक्षिणी अमेरिका तक पहुंच गये बल्कि उन्होंने तत्कालीन इंका और एज्टेक साम्राज्यों को जीतना भी शुरू कर दिया।

नयी दुनिया (उत्तरी और दक्षिण अमेरिका) के उपनिवेशों के साथ यूरोपीय व्यापार एशिया के साथ होने वाले व्यापार से भिन्न था। पहले अमेरिकी खजानों को लूटा गया और फिर बहुमूल्य वस्तुओं (सोना और चांदी) के खानों पर अधिकार जमाकर उन्हें स्पैनिश और पुर्तगालियों ने अपने-अपने वतन भेजना शुरू किया। कुछ समय बाद यूरोपीय देश चीनी, लकड़ी, तंबाकू, रूई और मछली जैसे सामानों का आयात करने लगे और कपड़ा, घरेलू फर्नीचर और साजोसामान और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात करने लगे। इसके अलावा दासों के व्यापार में खूब वृद्धि हुई। ईख, तंबाकू, रूई की खेती और सोने और चांदी की खानों में मजदूरों की जरूरत पड़ती थी, इस काम के लिए अफ्रीकी दासों का आयात किया जाता था। आरम्भ में अमेरिकी ''भारतीयों'' के प्रति औपनिवेशिक देशों का रवैया बहुत कठोर और निर्मम था। उदाहरणस्वरूप, मेक्सिको की जनसंख्या 1519 ई. में 250 लाख थी, वह 1600 में घटकर 10 लाख रह गयी। नयी दुनिया के बहुमूल्य वस्तुओं की खान की खोज से सबसे ज्यादा फायदा स्पेन को हुआ। सोलहवीं शताब्दी के दौरान अमेरिका से स्पेन को निर्यात होने वाली वस्तुओं में 90% हिस्सा बहुमूल्य पत्थरों का था। चार्ल्स पंचम और उसके पुत्र फिलिप द्वितीय के नेतृत्व में स्पेन यूरोप का सबसे शक्तिशाली देश साबित हुआ। दूसरी तरफ पूरब के मसाले के व्यापार पर पुर्तगालियों ने अपना नियंत्रण लगातार बढ़ाना शुरू किया।

सोलहवीं शताब्दी के दौरान पूरब और अमेरिका से बढ़ते संबंधों के कारण व्यापार में काफी बढ़ोत्तरी हुई। अतलांतिक तट पर व्यापार की गतिविधि तेज होती गयी। इस कारण एटवर्प

का तेजी से विकास हुआ। (एंटवर्प पहले दक्षिण नेदरलैंड का हिस्सा था और अब वह बेल्जियम का हिस्सा है) पुर्तगाली व्यापारियों ने अपने मसाले के व्यापार के लिए एंटवर्प को केंद्र बनाया। जर्मन व्यापारियों ने अपने धातु व्यापार और अंग्रेज व्यापारियों ने अपने कपड़ा व्यापार के लिए एंटवर्प को अड्डा बनाया। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता गया इटली का व्यापार पर एकाधिकार समाप्त होता गया।

इसी समय उत्तरी नेदरलैंड भी प्रमुख व्यापारिक और उत्पादन क्षेत्र के रूप में तेजी से उभर रहा था। डच अपने समुद्री अभियानों और जहाजरानी उद्योग के लिए प्रसिद्ध थे। 1550 ई. के बाद उन्होंने बाल्तिक समुद्री क्षेत्र के खाद्यान्न व्यापार पर भी अधिकार जमा लिया। सोलहवीं शताब्दी के दौरान डचों ने कृषि और उद्योग के क्षेत्र में कई परिवर्तन किये। उन्होंने दलदल और समुद्री भूमि पर खेती करने की तकनीक विकसित की। दुग्ध उत्पादन उद्योग फला फूला था और पवनचक्की का खूब उपयोग होता था। उन्होंने हल्के व्यापारिक जहाज बनाए, वे अपने युद्धपोतों पर कम से कम जहाजियों को रखते थे और निम्नकोटि की शराब और कपड़े निर्यात करते थे। 1585 में एंटवर्प पर स्पेन का अधिकार हो गया। इसके बाद उत्तर-पश्चिमी अतलांतिक क्षेत्र में एमस्टर्डम (उत्तरी नेदरलैंड) प्रमुख व्यापार केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
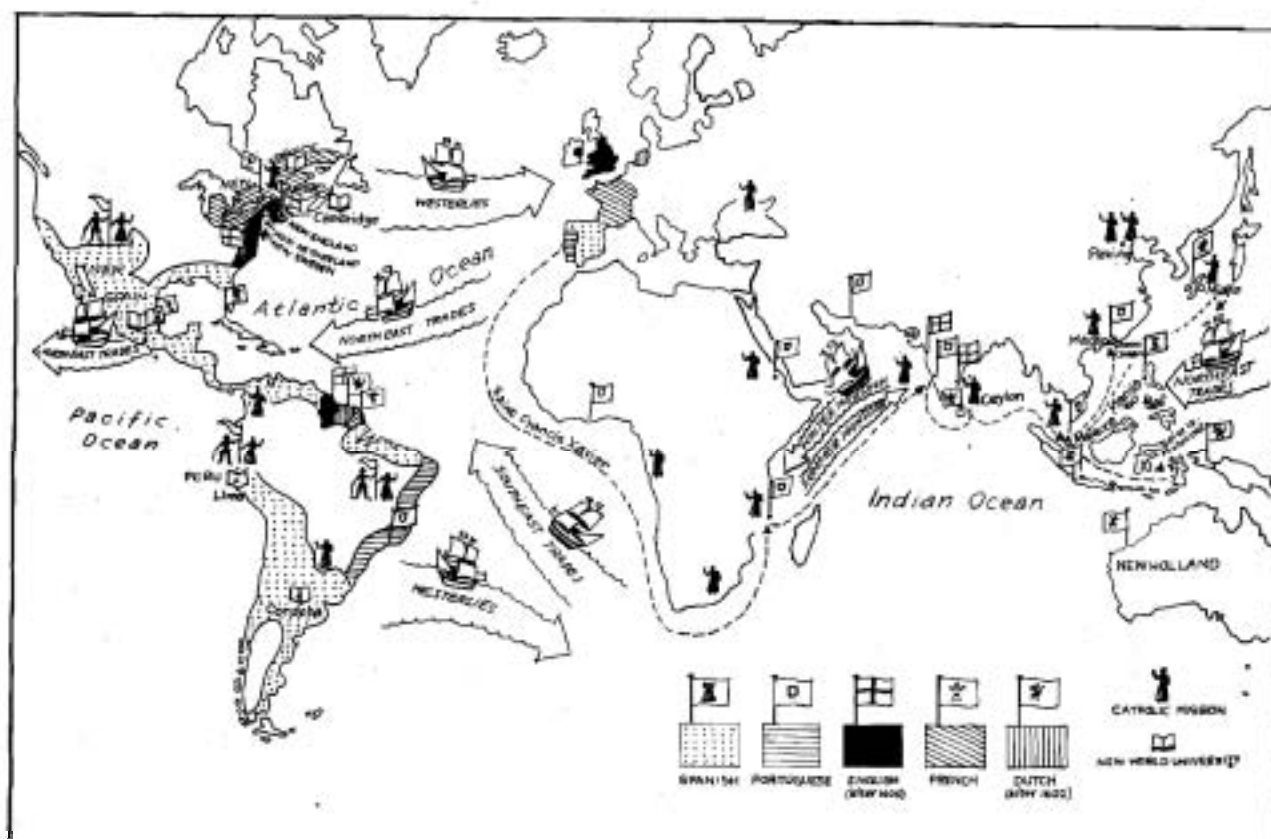
2. यूरोपीय संस्कृति का प्रसार (16वीं-17वीं शताब्दी के आसपास)

6.5 सोलहवीं शताब्दी का इंग्लैंड : परिवर्तन के दौर

आने वाली शताब्दियों में स्पेन, पुर्तगाल, इटली और नेदरलैंड को एक देश मात देने वाला था। उस देश का नाम था इंग्लैंड। स्पेन की तरह इंग्लैंड की न तो बहुमूल्य वस्तुओं के खान तक सीधी पहुंच थी और न ही आरंभ में पुर्तगालियों की तरह लाभकारी मसाले के व्यापार पर कोई विशेष पकड़ थी। इसके बावजूद सोलहवीं शताब्दी का अंत आते-आते

इंग्लैंड इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने 1588 के नौसैनिक युद्ध में स्पेन को हरा दिया। इंग्लैंड की इस जीत के पीछे उसके अंदरूनी परिवर्तन का प्रमुख हाथ था। 15वीं शताब्दी के अंत में हुए सामंती संकट के कारण यह बदलाव आया। इस समय इंग्लैंड में "एन्क्लोजर मूवमेंट" (घेराबंदी आंदोलन) नामक आंदोलन हुआ। अंग्रेज भूमिपतियों को कृषि में घाटा हुआ और उन्हें विद्रोही कृषकों का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपने खेतों की घेराबंदी शुरू कर दी और उन्हें चारागाह के रूप में बदलना शुरू किया। इसके कई परिणाम सामने आये।

इन चारागाहों का उपयोग व्यापारिक उद्देश्य को ध्यान में रखकर भेड़ों के पालन के लिए किया गया। इस धंधे से मांस और ऊन के व्यापार को गति मिली और संकट के दिनों में भूमिपतियों ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की, बल्कि मुनाफा भी कमाया। सर थॉमस मोरे ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "यूरोपिया" में लिखा है कि आरंभिक सोलहवीं शताब्दी में भेड़ आदमी को खा रहे थे।

सोलहवीं शताब्दी में जनसंख्या के पुन: स्थायित्व प्राप्त करने के बाद खेती का सिलसिला फिर शुरू हुआ, साथ ही साथ भेड़ और पशुपालन का धंधा भी चलता रहा। घेराबंदी आंदोलन (Enclosure movement) का सबसे उल्लेखनीय परिणाम यह हुआ कि भूमिपति की जमीन पर परम्परागत रूप से रह रहे किसान उजड़ गए। अपनी भूमि छिन जाने के बाद वे कृषिदास बनने को मजबूर हुए या बंदरगाहों पर चले गये और आजीविका की खोज में शहरी इलाकों की ओर भागे। सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के दौरान "प्रगतिशील अंग्रेज भूमिपतियों" के उद्यम से अंग्रेजी कृषि व्यवस्था में मूलभूत बदलाव आये। वे घेराबंदी आंदोलन के प्रतिफलन थे, जो कृषि में वाणिज्यिक लाभ के लिए लगातार पूंजी निवेश कर रहे थे। वे खाद्यान्न और ऊन के बाजार के लिए कृषि का विकास करना चाहते थे। 1485 के बाद ट्यूडर राजतंत्र के उदय ने इस विकास को और गति दी। जब द्वितीय ट्यूडर शासक, हेनरी अष्टम ने 1530 के दशक में चर्च की सम्पत्ति को जब्त कर उसे बेचने का फैसला किया, तब जमीन के भूखे इन व्यापारिक भूमिपतियों ने शीघ्रता से यह जमीन खरीद ली और अपने उत्पादन को बढ़ाया। इसके अतिरिक्त यह वर्ग पुराने सामंती कुलीन वर्ग के लोगों की जमीन को किराये पर लेकर भी अपना धंधा बढ़ा रहा था। इंग्लैंड में उदित हो रहे इन वाणिज्यिक भूमिपतियों को भद्रवर्ग (gentry) के नाम से जाना जाता था।

सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेजी कृषि समाज में मोटे तौर पर चार वर्ग सामने आये :

- बड़े भूमिपतियों का ऐसा वर्ग जो किराये की आमदनी से अपनी जिंदगी बसर कर रहा था।
- भद्रवर्ग **(gentry)**
- काश्तकार किसान
- भूमिहीन खेतीहर मजदूर

इसी समय अंग्रेज व्यापारी ऊन और कपड़े के निर्यात को लगातार बढ़ा रहे थे। अंग्रेजी कपड़े एंटवर्प होकर यूरोप पहुंच रहे थे। 1520 से आर्थिक विकास में तेजी आयी। प्रतिरक्षा के खर्च को वहन करने के लिए हेनरी अष्टम ने मुद्रा का अवमूल्यन कर दिया। इस प्रकार यूरोपीय बाजार में अंग्रेजी माल की कीमत कम दी गयी।

1550 में यूरोपीय कपड़ा बाजार में अधिक कपड़े की आपूर्ति हो जाने से मंदी आ गयी। इससे अंग्रेजी कपड़ा उद्योग को आघात पहुंचा इस संकट का सामना करने के लिए अंग्रेज उत्पादकों ने अपने उत्पादों में परिवर्तन किया और नये क्षेत्रों की खोज की। अंग्रेज कपड़ा उत्पादकों ने ज्यादा से ज्यादा अपरिष्कृत कपड़े का निर्यात आरंभ किया, जो बाद में नये वस्त्र विन्यास या वर्स्टेड के रूप में ख्यात हुआ। 1550 के बाद कोयला और धातु उद्योग का तेजी से विकास हुआ। घरों, ईंटों की भट्टियों और बीयर, चीनी, शीशा और साबुन के उत्पादन में जलाने के काम में लकड़ी के बदले कोयले का उपयोग बढ़ गया। जहाजरानी बर्तन और उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोयला, लकड़ी और धातु उद्योग का विकास हुआ। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैंड में सही माहौल का निर्माण हुआ और वहाँ की आर्थिक स्थिति तेजी से विकसित हुई। एलिजाबेथ के शासनकाल की स्थिरता, जनसंख्या का बढ़ाव, भौगोलिक खोज और फ्रांस और दक्षिणी नेदरलैंड से प्रोटेस्टेंटों (जो ज्यादातर व्यापारी थे) के आगमन से आर्थिक विकास का एक सही माहौल कायम हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) सामंतवाद के पतन के तीन कारकों का उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

2) भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहित करने वाले तत्वों का उल्लेख 50 शब्दों में करें।

....

....

....

....

....

3) 16वीं शताब्दी के दौरान यूरोप के अन्य देशों की तुलना में इंग्लैंड के विकास को आप कैसे व्याख्यापित करेंगे? 100 शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

4) सही वक्तव्य पर (✓) का निशान लगाएं।

1) क) सामंती समाज में विभिन्न वर्गों के आपसी संबंध विश्वास और संरक्षण पर आधारित नहीं थे।

ख) सामंती समाज भूमिपतियों और किसानों की आपसी निर्भरता और निर्भरता पर आधारित थी।

ग) सामंती समाज में किसान अपने स्वामियों की सेवा करने के लिए वैधानिक रूप से बाध्य नहीं थे।

2) क) पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन के दौरान व्यक्तिवाद पर जोर नहीं था, बल्कि सामूहिक सत्ता द्वारा व्यक्ति की गुलामी पर जोर था।

ख) पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन के दौरान कई लेखकों ने चर्चा में व्याप्त भ्रष्टाचार को जनता के सामने रखा था।

ग) पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन के विचारों का यूरोप के मध्यवर्ग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

6.6 व्यापारिक पूंजी के दौरान उत्पादन

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति हुई। इस दौरान बाजारों का अभूतपूर्व विकास हुआ और मुद्रा अर्थव्यवस्था तेजी से विकसित हुई। पुराने समय से चली आ रही बार्टर व्यवस्था (वस्तुओं का लेन-देन) के बदले मुद्रा का प्रयोग काफी बढ़ा। संचार के साधन विकसित हुए। 1600 ई. तक यूरोप के सभी महत्वपूर्ण शहर डाक व्यवस्था से जुड़ गये। इन वाणिज्यिक और प्रशासनिक गतिविधियों के कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति तेजी से सामने आयी। लंदन, पेरिस, एंटवर्प और एमस्टर्डम का तेजी से विकास हुआ।

यह व्यापारियों का युग था। विकसित बाजार के कारण मुनाफे की गुंजाइश काफी बढ़ गयी। व्यापारी कम लागत से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करना चाहते थे। इस काम में श्रेणी संस्थाएँ बाधा उत्पन्न कर रही थीं। यहाँ आप समझ लें कि ये श्रेणी संस्थाएँ क्या थीं। श्रेणियाँ कारीगरों और कामगारों का संघ थी, जो उत्पादन की मात्रा, गुणवत्ता और मूल्य पर नियंत्रण रखती थी। वे बेहतर मजदूरी और मजदूरों के उत्पादन के सही मूल्य की सुरक्षा करती थी और बुरे दिनों में कामगारों की देखभाल करती थी। मध्यकाल में अलग-अलग व्यवसायों की अलग-अलग श्रेणियाँ थी, मसलन बुनकरों, धातुकारों, बढ़इयों, चर्मकारों आदि के अपनी-अपनी श्रेणियाँ थीं। श्रेणियों के अंतर्गत उपश्रेणियाँ भी थी, मसलन बुनकर की श्रेणियों के अंतर्गत धागा बनाने वालों और रंगरंजों की श्रेणियाँ थी। अक्सर किसी खास कला और निपुणता की जानकारी पर किसी एक खास श्रेणी का आधिपत्य होता था। यह निपुणता श्रेणी-विशेष के सदस्यों को ही सिखाई जाती थी। निपुणता प्राप्त करने वाला युवा सदस्य अपने वरिष्ठ सदस्य के साथ जुड़कर काम सीखता था। उसे किसी दूसरे को (श्रेणी के बाहर) यह कला सिखाने का अधिकार नहीं था।

16वीं शताब्दी के व्यापारियों के सामने बढ़ी हुई मजदूरी एक समस्या थी। इस बाधा को दूर करने के लिए इन व्यापारियों ने अपनी आमदनी बढ़ाने के इच्छुक किसान परिवारों को शिल्पगत कार्यों के लिए अग्रिम राशि मुहैया करना शुरू किया। वे श्रेणी से असंबद्ध कारीगरों को भी अग्रिम राशि देने लगे। अग्रिम देने की इस व्यवस्था को घरेलू व्यवस्था भी कहा जाने लगा। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ थीं :

1) व्यापारी शिल्पियों को पूंजी और कच्चा माल अग्रिम तौर से दे देते थे। वे उत्पाद के प्रकार, गुणवत्ता और मात्रा का भी उल्लेख कर दिया करते थे।

2) कारीगर अपने घर में ही काम करता था, अपने औजारों का उपयोग करता था और अपने परिवार के सदस्यों के श्रम का इस्तेमाल करता था।

3) वे बना बनाया माल व्यापारियों को दे देते थे, व्यापारी इसे मुनाफा लेकर बेच देते थे।

इस व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि व्यापारियों का अभी भी श्रम प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण नहीं था, क्योंकि कारीगर घर पर काम करते थे। दूसरे, औजार और अपने काम करने की क्षमता पर भी अभी कारीगर का ही नियंत्रण था। व्यापारियों की दृष्टि से, इस व्यवस्था का दोष यह था कि इसमें तकनीकी विकास की गुंजाइश कम थी, लेकिन दूसरी तरफ श्रेणियों के बंधन से मुक्त कारीगरों के परिवार का सस्ता श्रम उन्हें उपलब्ध था। अभी व्यापारी प्रत्यक्ष रूप में उत्पादक नहीं थे और उनके मुनाफे का स्रोत व्यापार तक सीमित था। इस प्रक्रिया में 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान जो पूंजी जमा हुई, उसे व्यापारिक पूंजी के नाम से जाना जाता है। केवल व्यापारी ही पूंजी नहीं जमा कर रहे थे बल्कि श्रेणी के बंधन से मुक्त कारीगर उद्यम दिखाकर, बाजार में अपना माल बेचकर पूंजी जमाकर रहे थे और समाज में अपनी सामाजिक और आर्थिक हैसियत बढ़ा रहे थे। औद्योगिक विकास के इस दौर को पूर्व-औद्योगिकरण युग के रूप में जाना जाता है। इस घरेलू व्यवस्था ने न केवल व्यापारिक पूंजी का निर्माण किया बल्कि एक ऐसा सामाजिक और जनसांख्यिकी (जनसंख्या संबंधी) आधार प्रदान किया, जिस पर अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और उन्नीसवीं शताब्दी की कारखाना व्यवस्था और आधुनिक विज्ञान और तकनीक का भवन निर्मित किया जा सका। घरेलू व्यवस्था के कारण किसानों की असमानता बढ़ी, परिवार के सदस्यों की संख्या (श्रम शक्ति) बढ़ाने के लिए विवाह कम उम्र में होने लगे, और विशेष क्षेत्रों में निपुणता और पूंजी पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगा। इन्हीं क्षेत्रों ने बाद में औद्योगिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। फ्रांस के निकट फलैंडर्स और इग्लैंड में पूर्व एंगलिया इसके उत्तम उदाहरण हैं।

6.7 व्यापार के तरीके और संगठन

सोलहवीं शताब्दी से व्यापार में काफी प्रगति हुई। व्यापार के बढ़ते आकार और प्रकार के कारण ऋण व्यवस्था और मुद्रा व्यवस्था की पुनर्व्यवस्था की आवश्यकता पड़ी। ऋण देने, व्यापारिक आदान-प्रदान और हस्तांतरण के लिए ड्राफ्ट और ऋण पत्रों का व्यापक प्रयोग शुरू हुआ। कागज के नोटों का चलन काफी बाद में हुआ। कुछ राज्यों में एक तरह की मानक मुद्रा व्यवस्था लागू करने की कोशिश की गयी। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक

कई यूरोपीय देशों में पूर्णरूपेण मानक मुद्रा का प्रचलन शुरू हो गया।

पन्द्रहवीं शताब्दी तक व्यापारी या तो निजी तौर पर व्यापार करते थे या ज्यादा से ज्यादा पूरा परिवार व्यापार में लगा होता था। मिलन के स्फोरजा, फलोरेंस के मेडिसि और जर्मनी के फगरर्स, यूरोप के कुछ प्रसिद्ध व्यापारिक घराने थे। इसके अतिरिक्त व्यापारी साझेदारी में भी व्यापार करते थे। उत्तरी यूरोपीय व्यापारियों का एक लीग (हेनसिप्टिक लीग) इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इस लीग के सदस्य अधिकांशतः जर्मनभाषी थे। पर, इस साझेदारी व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी यह थी कि इसमें उत्तरदायित्व का भार भी बँट जाता था। जहाजरानी उद्योग और व्यापार के प्रसार की वजह से अधिक पूंजी निवेश अधिक जोखिम उठाने की जरूरत पड़ी। इस आम हित के कारण व्यापारी एक दूसरे के निकट आये और इसके परिणाम स्वरूप विनियामक कम्पनियों **(Regulated companies)** का निर्माण हुआ। ये कम्पनियाँ क्षेत्र विशेष के किसी खास व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित करने की कोशिश भी करती थीं। कम्पनी के सदस्य अपने स्रोतों को इकट्ठा करने पर जोर नहीं देते थे। बल्कि कुछ ऐसे नियमों पर चलने का करार करते थे, जो सभी सदस्यों के लिए लाभदायक होता था, मसलन गोदी और गोदाम की देखभाल, बिना लाइसेंस वाले व्यापारियों के खिलाफ कार्यवाई और एकाधिकार की रक्षा। साहसी व्यापारियों की अंग्रेजी कम्पनी एक रेगुलेटेड कम्पनी थी, जिसकी स्थापना जर्मनी और नेदरलैंड के साथ व्यापार के लिए हुई थी।

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान ज्वायंट (Joint) स्टॉक कम्पनी जैसे परिष्कृत व्यापारिक संगठन का विकास हुआ। व्यापार के बढ़ते हुए कारोबार के कारण एक अधिक फलक वाले सुगठित संगठन की आवश्यकता महसूस हुई ताकि व्यापार में आने वाले जोखिमों को कम किया जा सके, स्थायित्व बनाया जा सके और पूंजी आसानी से प्राप्त की जा सके। ज्वायंट स्टॉक कम्पनियाँ बड़ी संख्या में निवेशकों को अपनी पूंजी का हिस्सा बेचती थी। रेगुलेटेड कम्पनियों में ऐसी व्यवस्था नहीं थी। पूंजी के हिस्सेदारों का कम्पनी के मुनाफे में एक निश्चित हिस्सा होता था। ये हिस्सेदार कम्पनी के कार्यकलापों में सीधे तौर पर हिस्सा नहीं लेते थे। ज्वायंट स्टॉक कम्पनियों के दो मुख्य लाभ थे :

- काफी बड़ी पूंजी इकट्ठी की जा सकती थी और इसका जोखिम और खर्च का भार पूंजी के हिस्सेदारों पर भी होता था। मामूली आमदनी वाले लोग भी अपनी बचत से पूंजी के हिस्से खरीद सकते थे और मुनाफा कमा सकते थे।
- ज्वायंट स्टॉक कम्पनी एक वैधानिक सामूहिक निकाय थी, जो पूंजी के हिस्सेदारों के अलग हटने या मृत्यु हो जाने के बावजूद भी कायम रहती थी।

चार्टर्ड कम्पनियों का निर्माण इस क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। ये कम्पनियाँ सरकारी आज्ञापत्र के आधार पर किसी खास क्षेत्र के व्यापार विशेष पर अपना एकाधिकार स्थापित करती थी। इस प्रकार की कई कम्पनियों ने पूरब के व्यापार और वहाँ के लोगों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। इनमें अँग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी (1600), डच ईस्ट इंडिया कम्पनी (1602), फ्रांसिसी ईस्ट इंडिया कम्पनी आदि प्रमुख हैं।

6.8 वाणिज्यवाद

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में कुछ ऐसे आर्थिक विचार और कार्यकलाप सामने आये; जिससे यूरोप के देश प्रभावित हुए। इन्हें वाणिज्यवाद के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यवाद में व्यवस्थागत एकरूपता कभी नहीं आ पाई। यह कुछ सिद्धांतों और नीतियों का समुच्चय था, जिसके माध्यम से राज्य राष्ट्रीय समृद्धि और शक्ति के लिए आर्थिक कार्यकलापों में हस्तक्षेप करता था। इसके विचारों और नीतियों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

1) यह विश्वास किया जाता था कि विश्व में व्यापार की मात्रा लगभग नियत है राज्य की नीतियाँ इस प्रकार बनाई जाएँ कि उस व्यापार के अधिक से अधिक हिस्से पर अधिकार जमाया जा सके।

2) बहुमूल्य पदार्थ, जैसे सोना और चांदी राष्ट्रीय सम्पत्ति के लिए अनिवार्य माना जाता

था। अगर राष्ट्र के पास बहुमूल्य पदार्थों का प्राकृतिक स्रोत नहीं है, तो उसे व्यापार द्वारा सोना-चांदी इकट्ठी करनी चाहिए।

3) बहुमूल्य पदार्थ जमा हो सकें, इसलिए व्यापार संतुलन अपने हक में होना चाहिए, अर्थात् आयात कम और निर्यात ज्यादा। दूसरे शब्दों में, जितना सामान देश से बाहर जा रहा है उससे ज्यादा मूल्य का सोना और चांदी देश में आना चाहिए।

4) इस भुगतान संतुलन को बनाए रखने और बढ़ाते रहने के लिए उत्पादित वस्तुओं के आयात पर अधिक कर, निर्यात पर कम कर, कच्चे माल के आयात पर कम कर लगाना चाहिए और निर्यात को प्रोत्साहित करना चाहिए।

5) राज्य को बनी बनाई वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए। इन वस्तुओं के निर्माण के लिए राज्य अधिकृत कारखानों और मिलों का इंतजाम, इन उत्पादनों पर एकाधिकार और श्रेणियों को नियंत्रित करना चाहिए।

6) उपनिवेशों का उपयोग बाजार के रूप में किया जा सकता था और वहाँ से कच्चा माल और अगर संभव हो तो मूल्यवान पदार्थ लाया जा सकता था। उपनिवेशों की प्राप्ति और रक्षा के लिए अन्य औपनिवेशिक शक्ति से लड़ाई भी की जा सकती थी।

7) एक उपनिवेश को, औपनिवेशिक देश हमेशा दुहता रहता था। उपनिवेश के उद्योग को हतोत्साहित किया जाता था। इससे दो फायदे होते थे। एक तो बनी बनायी वस्तुओं का बाजार तैयार मिलता था और दूसरे औपनिवेशिक देशों के कारखानों के लिए कच्चे माल की कमी नहीं पड़ती थी।

कुछ देशों के संदर्भ में हम वाणिज्यवाद को विस्तार से समझाने की कोशिश करेंगे। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रानी एलिजाबेथ के राज्यकाल के दौरान इंग्लैंड में वाणिज्यवाद से संबंधित कई कदम उठाए गये। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यही स्थिति बनी रही। सत्रहवीं शताब्दी में कई नेविगेशन एक्ट पारित किये गये। ओलिवर क्रौमवेल के नेतृत्व के दौरान 1651 में पहला नेविगेशन एक्ट पारित हुआ। इसके तहत इंग्लैंड के औपनिवेशिक उत्पादों को अंग्रेजी जहाजों से ही ले जाया जा सकता था। इसका मुख्य उद्देश्य जहाजरानी उद्योग में डच वर्चस्व को समाप्त करना था। इसके बाद लगातार कई नेविगेशन एक्ट पारित हुए, जिनका उद्देश्य औपनिवेशिक उत्पादों पर अंग्रेज व्यापारियों का एकाधिकार स्थापित करना और उन बाजारों पर कब्जा जमाए रखना था। लंदन का एक व्यापारी और ईस्ट इंडिया कम्पनी का निदेशक थामस मून इस व्यवस्था के प्रमुख समर्थकों और विचारकों में से एक था।

3. बंदरगाह से रवाना होते हुए यूरोपी जहाज

मून ने धन और पैसे को एक बताया और विलासी वस्तुओं के आयात को कम करने की वकालत की और अंग्रेजी जहाजों को अलग से जहाजरानी अधिकार देने की अनुशंसा की।

फ्रांस में 1661 और 1683 के बीच लुईस xiv के मुख्यमंत्री जीन बैपटिस्ट कॉलबर्ट ने वाणिज्यवाद से संबंधित कई नीतियाँ लागू कीं। उसने आयातित वस्तुओं पर ज्यादा कर लगाए मूल्यवान वस्तुओं और अनाज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया, विशेष विनिर्मिता और राज्य के नियंत्रण में कई कारखाने स्थापित किए गये। फ्रांसीसी प्रभुत्व स्थापित करने के लिए उन्होंने प्रमुख प्रतिद्वंद्वी डचों से युद्ध भी छेड़ा। वेस्टइंडीज, कनाडा, लूसियाना, भारत और अफ्रीका में फ्रांसीसी औपनिवेशिक शक्ति का विस्तार हुआ।

जर्मनी में वाणिज्यवाद को "कैमरेलिज्म" के नाम से जाना जाता था। यह शब्द केमर से बना था, जिसका अर्थ राजकोष होता है। इस "कैमरेलिज्म" की शुरुआत प्रशा के राजा फ्रेडरिक विलयम I (1713-1740) और फ्रेडरिक महान (1740-86) ने की थी। इसके पीछे उनका उद्देश्य निर्यात को बढ़ाना और बहुमूल्य वस्तुओं को इकट्ठा करना था ताकि राज्य की शक्ति में वृद्धि हो सके।

1600 और 1700 के बीच वाणिज्यवादी विचार बहुत प्रभावशाली रहे और अठारहवीं शताब्दी के अंत तक इसकी कई प्रवृत्तियाँ बरकरार रहीं। अठारहवीं शताब्दी के अंत में ऐडम स्मिथ ने 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "द वेल्थ ऑफ नेशन्स" में इस नीति की आलोचना की। प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक मॉरिस डॉब के शब्दों में—"वाणिज्यवादी व्यवस्था व्यापार के माध्यम से राज्य नियंत्रित शोषण व्यवस्था थी जिसने पूंजीवादी उद्योग की पूर्वपीठिका की भूमिका अदा की : यह निश्चित रूप से आदिम संचय के युग की आर्थिक नीति थी।" इस वक्तव्य से यह स्पष्ट है कि यूरोप में वाणिज्यवाद के काल में धन का संचय हुआ जिसने अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी की औद्योगक क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

6.9 मूल्य वृद्धि और संकट

दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य में देखें, तो केवल बहुमूल्य पदार्थों को खजाने में जमा कर लेने से कोई देश अमीर नहीं बन जाता। कुछ व्यक्ति सोना और चाँदी जमा करके अमीर बन सकते हैं, पर अगर सारा देश सोना और चाँदी जमा करने लगेंगे, तो यह खतरनाक प्रवृत्ति होगी। लोग देश के बाहर की चीज खरीदने लगेंगे। सवाल यह है कि यह प्रवृत्ति खतरनाक क्यों हैं? उत्तर स्पष्ट है। सोने और चांदी का अपने आप में कोई महत्व नहीं है।

अपने आप में न तो इसका कोई उपयोग किया जा सकता है न ही ये लोगों को रोजगार दे सकते हैं। हाँ, इनका उपयोग उत्पादन के प्रसार के लिए किया जा सकता है। मतलब इन्हें खजाने के बाहर निकालकर उत्पादन में लगाना होगा। ऐसा न किया गया तो देश आयातित वस्तुओं पर निर्भर हो जाएगा और सोने-चांदी की मूल्यवत्ता का उपयोग नहीं किया जा सकेगा। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान स्पेन के साथ ऐसा ही हुआ। आप पढ़ चुके हैं कि दक्षिण अमेरिका से काफी मात्रा में सोना और चांदी स्पेन आया था।

1594 में अमेरिका से बाहर जाने वाली वस्तुओं में बहुमूल्य पदार्थों का प्रतिशत 95.6 था। स्पेन ने 1530 ई. में दक्षिणी अमेरिका पर अपना प्रभुत्व जमाया। उसे मानों सोने का खजाना मिल गया। सोलहवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक दक्षिण अमेरिका से 27 लाख किलोग्राम सोना स्पेन जा चुका था। इसमें कोई संदेह नहीं कि सोलहवीं शताब्दी में स्पेन समृद्ध और शक्तिशाली था। पर अंततः स्पेन के पास सोने-चाँदी का यह ढेर रह नहीं सका। स्पेनवासी यूरोप के बाजार से खाद्यान्न और औद्योगिक वस्तुएँ खरीदने लगे, इससे इंग्लैंड और हॉलैंड जैसे देशों के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। अंततः स्पेन को गहरा धक्का लगा, जब उसके सोने और चाँदी के कारण मुद्रा के प्रसार में तेजी से वृद्धि हुई, जिससे मूल्य भी तेजी से बढ़े इसे यूरोप में मूल्य क्रांति के नाम से जाना जाता है। अनुमानतः 1500 और 1600 के बीच सोने और चाँदी की मात्रा में तिगुनी बढ़ोत्तरी हुई। 1503 और 1650 के बीच कुल मिलाकर लगभग, 20,644 टन चाँदी और सोने का आयात किया गया। हालांकि सोलहवीं शताब्दी में व्यापार और जनसंख्या के तेजी से बढ़ने के कारण इनकी कुछ खतत हुई, पर इससे आमतौर पर मूल्य में ही वृद्धि हुई।

उदाहरणस्वरूप, सोलहवीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड और फ्रांस में अनाज के मूल्य में क्रमशः चौगुनी और छहगुनी वृद्धि हुई। बढ़ते हुए मूल्य, इटली, पुर्तगाल, स्पेन जैसे देशों की आर्थिक अवरुद्धता धार्मिक युद्ध और यूरोप के अधिकांश भागों में घटती हुई आबादी से सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी। तीस वर्षीय युद्ध (1618-1648) महामारी और किसानों के विद्रोह ने इस संकट को और भी गहरा बना दिया। यह संकट चारों ओर फैला हुआ था, पर यूरोप के सभी देशों में यह संकट समान गंभीर नहीं था। यह स्पेन और इटली जैसे देशों के लिए घातक सिद्ध हुआ जहाँ सोलहवीं शताब्दी में व्यापार और बाजार के बदलते स्वरूप से राजनीति, तकनीक और सामाजिक धार्मिक संबंध ताल नहीं बैठा सके। दूसरी तरफ डचों ने अपने को न केवल इस संकट से उबार लिया बल्कि वो एक विकसित अर्थव्यवस्था और व्यापार के साथ सामने आये। 1640 के दशक में इंग्लैंड में नागरिक युद्ध छिड़ गया, जिसके परिणामस्वरूप स्टुअर्ट राजा चार्ल्स प्रथम को अपनी जान गंवानी पड़ी। यहीं से राजनीतिक शक्ति के कुलीनों और व्यापारियों तथा उद्योगपतियों के हाथों में आने की प्रक्रिया शुरू होती है। तत्पश्चात् 1651 के बाद कई नेविगेशन एक्ट पारित किए गये। (इनकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं) जिन्होंने अंग्रेजी हितों की रक्षा की। कालबर्ट ने फ्रांस में कुछ ऐसे ही कदम उठाए और सत्रहवीं शताब्दी के संकट से अपने देश को बचाया। इस प्रकार 1700 के आसपास हॉलैंड, फ्रांस और इंग्लैंड यूरोप की प्रमुख शक्तियाँ रह गयी थी। इस समय तक शक्तियों का ध्यान भूमध्य सागर से हटकर अटलांटिक सागर के तटों पर केंद्रित हो गया था और इन देशों को फायदा यह था कि इन सभी देशों की पारसमुद्रीय बाजारों और उपनिवेशों तक पहुँच थी। अठारहवीं शताब्दी के दौरान यह तीनों प्रतिद्वंद्वी शक्तियाँ एक साथ उभरी। इनमें संघर्ष भी हुआ। लेकिन अपनी औद्योगिक क्रांति के बल पर अंग्रेजों ने अठारहवीं सदी के अंत तक सर्वोच्चता हासिल कर ली। अब सवाल यह उठता है कि ब्रिटेन पहला औद्योगिक राष्ट्र क्यों और कैसे बना? अगले भाग में हम इस जटिल प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करेंगे।

बोध प्रश्न 2

1) बाणिज्यिक क्रांति से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

2) घरेलू व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

3) वाणिज्यवाद में राज्य की भूमिका का उल्लेख सौ शब्दों में करें।

....

....

....

....

....

4) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें।

क) औपनिवेशिक शक्ति के लिए उपनिवेश की क्या उपयोगिता थी?

....

....

ख) औपनिवेशिक शक्तियाँ निर्यात को क्यों प्रतिबंधित करना चाहती थीं?

....

....

ग) चार्टर्ड कम्पनी से आप क्या समझते हैं?

....

....

6.10 इंग्लैंड : औद्योगीकरण की ओर

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तकनीकी विकास से कृषि और उद्योग के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। यह उन्नति इस हद तक हुई कि इसने ब्रिटिश अर्थव्यवस्था और समाज में क्रांति ला दी। "औद्योगिक क्रांति" नाम का चलन उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में हुआ और इस नाम की अनेकों व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयीं। वस्तुत: किसी एक कारक को औद्योगिक क्रांति में महत्वपूर्ण मानना और दूसरे को नकारना बड़ा मुश्किल काम है। अत: औद्योगिक क्रांति की प्रक्रिया का सूक्ष्म अवलोकन उपयोगी सिद्ध हो सकता है और विभिन्न तत्वों जैसे राजनीति, सांस्कृतिक मूल्य, जनसंख्या और स्रोतों के सही उपयोग आदि के आपसी आदान-प्रदान पर बातचीत की जा सकती है।

पिछले अध्याय में हमने इंग्लैंड में नागरिक युद्ध के परिणामों की चर्चा की थी। इससे वाणिज्यिक समुदायों को फायदा हुआ और इंग्लैंड की संसद में उनका वर्चस्व बढ़ता गया। जब राजा ने (1660 में राजतंत्र पुनर्स्थापित हो गया था) राजतंत्र की निरंकुश सत्ता को पुन: स्थापित करने की कोशिश की, तो 1688 में राज की निरंकुश सत्ता में कटौती कर दी गयी। इंग्लैंड में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हो गयी, जिसमें संसद प्रभावशाली शासकीय संस्था के रूप में उभर कर सामने आई। 1688 की घटनाओं को ग्लोरियस रेवल्यूशन (Glorious Revolution) के नाम से जाना जाता है। इसमें कोई खून खराबा नहीं हुआ और इसके ज़रिए शासन में कानून की सर्वोच्चता स्थापित हुई। ग्लोरियस रेवल्यूशन के बाद भद्र जनों (ऐसे भूमिपति जो वाणिज्यिक कृषि में लगे थे) और व्यापारियों की अंग्रेजी समाज और संसद में महत्ता तेजी से बढ़ी। उनके नेतृत्व में अठारहवीं शताब्दी के दौरान राज्य विधि निर्माण द्वारा घेराबंदी संबंधी नये कानून पारित किए गये। आपको याद होगा कि पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड में पहला घेराबंदी आंदोलन शुरू हुआ था। इसके तहत खेतों की घेराबंदी की गयी और इसका उपयोग भेड़ों को पालने और जानवरों के चारागाह के लिए किया गया। 1710 ई. के बाद घेराबंदी का उपयोग खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाने के लिए हुआ। भूमिपति वैज्ञानिक खेती और नयी फसलों तथा कृषि तकनीक के द्वारा भूमि की उर्वरता बढ़ाना चाहते थे। इसके तहत आम जनता की भूमि पर कब्जा किया गया, इन भूमियों पर किसानों का वंशगत अधिकार था। इसके परिणामस्वरूप भूमि का व्यापारिक वस्तु के रूप में विकास हुआ और भूमिपतियों के निजी स्वामित्व में बढ़ोत्तरी हुई। भूमिपत्तियों ने मुनाफा कमाने के लिए बाजार के लिए उत्पादन करना शुरू किया। उत्पादन की तकनीक में कई बदलाव आए, मसलन फसलों को बारी-बारी से उपजाया जाने लगा, नये औजारों और उर्वरकों का उपयोग शुरू हुआ। आधुनिक पम्पों की मदद से दलदल भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। इससे उत्पादकता में वृद्धि हुई। कृषि संबंधों और उत्पादन तकनीकों के इस परिवर्तन को अंग्रेजी कृषि क्रांति के नाम से जाना जाता है। अठारहवीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड के गेहूं उत्पादन में एक तिहाई वृद्धि हुई और जानवरों का औसतन वजन दुगुना हो गया। 1880 तक इंग्लैंड अपने घरेलू खाद्यान्न उत्पादन का नब्बे प्रतिशत खुद पैदा करने लगा।

हालाँकि घेराबंदी आंदोलन का एक उल्लेखनीय परिणाम यह हुआ कि कई किसान अपनी भूमि से अलग कर दिए गये। राज्य की सहायता से भूमिपतियों ने अधिक से अधिक भूमि पर कब्जा जमा लिया और किसान खेतिहर मजदूर बनने को विवश हुए। इस प्रक्रिया को

"अकिसानीकरण" के रूप में जाना जाता है, जिसमें किसान, किसान नहीं रह गये। सवाल यह उठता है कि भूमिहीन किसानों के इस बड़े वर्ग की स्थिति क्या हुई। साधारण स्थिति में उन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ता, पर इंग्लैंड में ऐसा माहौल बना कि उन्हें वैकल्पिक रोजगार प्राप्त हो गया। इसकी व्याख्या अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड के बाजार और व्यापार के विकास तथा मजदूरों की माँग के परिप्रेक्ष्य में की जा सकती है।

इस अवधि में निम्नलिखित प्रकार के बाजार सामने आये :

- घरेलू बाजार
- निर्यात बाजार
- राज्य द्वारा प्रदत्त बाजार

इंग्लैंड का घरेलू बाजार तेजी से फैला। यह कई कारणों से विकसित हो रहा था। हमने देखा कि अकिसानीकरण की प्रक्रिया के कारण अधिक से अधिक किसान मजदूर बनने को बाध्य हुए। इनमें से बहुत से भूमिहीन किसानों को भूमिपतियों ने खेतिहर मजदूर बना दिया। बचे हुए मजदूर शहरों को चले गये और उन्हें व्यापार, कारखानों और घरेलू क्षेत्रों में नौकरी मिली। अब उन्हें नगद मजदूरी मिलती थी, जिससे वे भोजन, वस्त्र और जरूरी वस्तुएँ खरीदते थे। दूसरे शब्दों में वे बाजार से चीजें खरीदने लगे और इस प्रकार उपभोक्ता वस्तुओं की माँग में वृद्धि हुई। इंग्लैंड में 1750 के दशक के दौरान जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। हालाँकि जनसंख्या की बढ़ोत्तरी हमेशा देश के आर्थिक विकास की द्योतक नहीं होती है। मसलन, आज कई गरीब देशों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और वे लगातार गरीब बने हुए हैं। इंग्लैंड के संदर्भ में केवल जनसंख्या की बढ़ोत्तरी नहीं हुई बल्कि साथ ही साथ आय की दीर्घावधि विकास दर में भी तेजी आयी। यहाँ तक कि अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चार दशकों में (जब जनसंख्या स्थिर थी) आयात में चालीस प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई, निर्यात के लिए किए जाने वाले उत्पाद में साठ प्रतिशत की बढ़त हुई और पुनः निर्यातित होने वाली वस्तुओं की विकास दर सौ प्रतिशत रही। इससे पता चलता है कि लोगों की क्रय क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इंग्लैंड में नयी उपभोक्ता वस्तुओं की माँग बढ़ी और इस माँग को पूरा करने के लिए नयी उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन होने लगा। आटा पीसने, बीयर उत्पादन, छुरी-काँटे और स्टोव उत्पादन के क्षेत्र में तेजी आयी। ज्यादा लोग घरों में आग तापने के लिए कोयले का उपयोग करने लगे। 18वीं शताब्दी में हुई जनसंख्या वृद्धि से औद्योगिक क्रांति के दौरान बड़े उत्पादन कार्य के लिए सस्ते मजदूर उपलब्ध हो गये।

घरेलू बाजार में स्थिरता और एकरूपता थी, जबकि विदेशी व्यापार में काफी वैविध्य था। अतः निर्यात को बढ़ावा देने के लिए 1780 के बाद उद्योगों का मशीनीकरण आरंभ हआ जिसने इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया। ई.जे.टा. सवाम अपनी पुस्तक "इंडस्ट्री एंड एम्पायर" में लिखते हैं : "घरेलू माँग बढ़ी पर विदेशी माँग में कई गुना वृद्धि हुई।"

इस निर्यात व्यापार में वृद्धि होने के साथ-साथ उपनिवेशी व्यापार में भी बढ़ोत्तरी हुई। 1700 के आसपास उपनिवेशी व्यापार का हिस्सा कुल वाणिज्य में पंद्रह प्रतिशत था, 1775 में यह बढ़कर तीस प्रतिशत हो गया। 1715 में उत्तरी अमेरिका और वेस्ट इंडीज के साथ ब्रिटेन का होने वाला व्यापार उसके कुल निर्यात व्यापार का उन्नीस प्रतिशत था जो 1785 में बढ़कर चौंतीस प्रतिशत हो गया। इसी अवधि में एशिया और अफ्रीका से होने वाले व्यापार का प्रतिशत सात से बढ़कर उन्नीस हो गया। ब्रिटेन के अधीन उत्तरी अमेरिका की जनसंख्या में 1700 से 1774 के बीच दस गुना वृद्धि हुई और इस प्रकार माँग भी बढ़ी। पहले चीनी, चाय, कॉफी, तम्बाकू और कपड़े का व्यापार होता था, अठारहवीं शताब्दी के अंत तक इसका स्थान मसालों और सोने ने ले लिया। चीनी, चाय, कॉफी, तम्बाकू, कपास आदि का उत्पादन बागानों में होता था और इसके लिए मजदूरों की जरूरत पड़ती थी। अतः उत्तरी अमेरिका, वेस्ट इंडीज और दक्षिण अमेरिका में, खासकर ब्राजील के चीनी और कॉफी के बगानों के लिए काफी संख्या में दासों को बेचा गया। एक मोटे अंदाज के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि सोलहवीं शताब्दी में दस लाख और सत्रहवीं शताब्दी में तीस लाख दास अफ्रीका से अमेरिका लाये गये। अठारहवीं शताब्दी में लगभग सत्तर लाख मजदूरों को स्थानान्तरित किया गया। 1780 के दशक में ब्रिटिश दास व्यापार ने काफी मुनाफा कमाया, अफ्रीका से निर्यातित दासों के आधे से अधिक व्यापार पर उनका वर्चस्व था।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान आक्रमक विदेश नीति की सहायता से ब्रिटेन ने अपनी स्थिति मजबूत की। ब्रिटेन ने इस अवधि में पाँच बड़े युद्धों में हिस्सा लिया और बड़ी शक्ति के रूप में उसकी धाक जम गयी। राज्य अधिक से अधिक उपनिवेश बनाने के चक्कर में था और आर्थिक लाभ के लिए युद्ध करने को कटिबद्ध था। इंग्लैंड ने अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए सारी शक्ति विदेश नीति पर लगा दी। परिणामस्वरूप अठारहवीं शताब्दी के अंत तक वह अपने प्रतिद्वंद्वियों फ्रांसीसी और डचों पर हावी हो गया। इसके साथ ही हमारे सामने बाजार का एक और तत्व उभर कर आता है, यह है राज्य द्वारा प्रदत्त बाजार। वाणिज्यिक युद्धों के परिणामस्वरूप नौसेना को मजबूत किया गया, अस्त्रों की माँग बढ़ी और नौसेना के लिए अधिक जहाजों की जरूरत पड़ी। अत: घरेलू और विदेशी बाजार के अलावा ब्रिटिश उत्पादक सरकारी ठेकों और राज्य की जरूरतों से भी मुनाफा कमाने लगे।

राजनीतिक स्थायित्व, चीजों की बढ़ती माँग और औद्योगीकरण की इच्छा रखने वाले समाज ने इंग्लैंड को औद्योगिक क्रांति के कगार पर खड़ा कर दिया। कई इतिहासकार 1750-1780 की अवधि को औद्योगिक क्रांति की तैयारी का काल मानते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि वृहद् बाजार की माँग को पूरा करने के लिए तेज मशीनी उत्पादन के जरूरी आधार पूंजी, श्रम और तकनीक का जुगाड़ हो चुका था। 1780 के दशक के बाद विकास इतनी तेजी से हुआ कि इससे उत्पादन में क्रांति आ गयी और उस आधुनिक समाज की नींव पड़ गयी जो आज इंग्लैंड और यूरोप तक ही सीमित नहीं है।

आज हम देख रहे हैं कि विज्ञान और तकनीक काफी तेजी से विकसित हो रही है और बदल रही है। अपना अस्तित्व बनाए रखने और सफल होने के लिए उत्पादकों को अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए नयी तकनीकों का उपयोग करना पड़ता है। आज के युग में पुरानी तकनीक को अपनाकर कोई भी उद्योगपति जिंदा नहीं रह सकता और अपने को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हुए परिवर्तन से अलग नहीं रख सकता। पर यह समझने की भूल नहीं करनी चाहिए कि इंग्लैंड के उत्पादक खुद वैज्ञानिक या तकनीक विशेषज्ञ थे। उनकी खासियत यह थी कि उन्होंने नये आविष्कारों को उत्पादन के लिए लगाया और घरेलू तथा विदेशी बाजार में अपना वर्चस्व जमाए रखा।

इसका मतलब यह नहीं है कि वैज्ञानिक विचारों की अपने आप में कोई भूमिका नहीं थी। पंद्रहवीं शताब्दी से ही यूरोप के प्रकृति संबंधी दृष्टिकोण और पुरानी धारणाओं में परिवर्तन आ रहा था। निकोलस कॉपरनिकस, गैलीलियो गैलीलर, आइज़ाक न्यूटन, फ्रैंसिस बेकन आदि विचारकों ने प्रयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सहारा लिया न कि विश्वासों और सुनी सुनाई बातों का। इससे एक वैज्ञानिक माहौल बना। सामूहिक रूप से वैज्ञानिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए रॉयल सोसाइटी ऑफ लंदन (1662) और फ्रेंच रॉयल अकादमी (1665-66) की स्थापना हुई। इन वैज्ञानिक विचारों के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप अंध विश्वास, जादुई शक्ति पर से विश्वास उठा और चिकित्सा और मानव-शरीर की बनावट के बारे में लोग वैज्ञानिक ढंग से सोचने लगे। अत: वैज्ञानिक विचारों ने एक माहौल पैदा किया, इस माहौल के कारण ही नये आविष्कारों और विचारों को स्वीकार कर सके।

4. न्यूटन का टेलिस्कोप
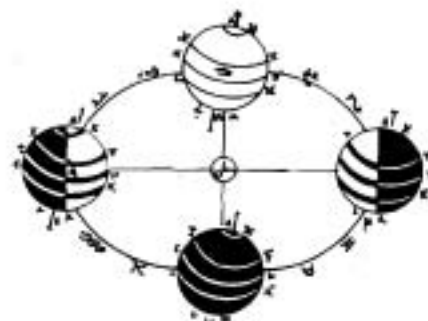
सूर्य और पृथ्वी के संबंधों पर गैलीलियो की धारणा

पर सर्वप्रथम ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति होने का कारण यह नहीं है कि इसका वैज्ञानिक माहौल अन्य यूरोपीय देशों से अधिक उपयुक्त था। ऊपर जिन खोजियों, आविष्कारों, वैज्ञानिकों और विचारकों की चर्चा की गयी है, वे फ्रांस, इटली, जर्मनी आदि यूरोप के कई हिस्सों से आये थे। पर इन वैज्ञानिक विचारों का उपयोग सर्वप्रथम ब्रिटेन ने किया। इसका कारण था अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था और समाज की आंतरिक शक्ति। यह शक्ति एक सतत ऐतिहासिक विकास का प्रतिफलन थी।

अठारहवीं शताब्दी तक आते-आते ब्रिटेन को पूरे विश्व का दूकानदार कहा जाने लगा। दूसरी तरफ फ्रांस में, स्थायी और एकरूप बाजार, पूंजी तथा श्रम के अभाव के कारण धन भूमि और सम्पदा खरीदने में लगाया जाने लगा। उच्च वर्ग और सरकार अपने में सीमित थे और ब्रिटेन के समान उनमें व्यापारिक पटुता नहीं थी। डच व्यापार और वित्तीय मामलों में कुशल थे। पर वे बड़े पैमाने पर होने वाले मशीनी औद्योगीकरण में अपने को ढाल नहीं सके।

6.11 औद्योगिक क्रांति

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही नयी तकनीक के उपयोग के प्रमाण मिलने लगते हैं। कई शहरों का पुनर्निमाण किया गया और अंतर्देशीय यातायात में महत्वपूर्ण विकास हुआ। नदियों से यातायात बढ़ा और नहरों का निर्माण हुआ। यातायात के साधनों के विकास से राष्ट्रीय बाजार बनने में मदद मिली और यातायात का खर्च कम हुआ। उदाहरणस्वरूप नहरों के माध्यम से यातायात करने से लिवरपूल और मैनचेस्टर या बर्मिंघम के बीच का यातायात खर्च आठ प्रतिशत कम हो गया।

1754 में स्टील के उत्पादन के लिए बेलन (Rolling) मशीन का निर्माण हुआ। हालांकि कपड़ा उद्योग में अपनाये जाने वाले तीन परिवर्तन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। 1765 में जेम्स हारग्रीव्ज ने स्पीनिंग जेनी का आविष्कार किया जिससे कारीगरों की कताई क्षमता में कई गुना वृद्धि हो गयी। अब एक आदमी आठ आदमी का काम कर सकता था। आर्कराइट ने बेलनों और तकलियों का सही तालमेल बैठाकर जेनी की उत्पादन शक्ति में और भी वृद्धि कर दी। क्राम्पटन मूल ने इस जेनी को और परिष्कृत किया और 1780 के दशक से यह वाष्प शक्ति से चलने लगी। इसके परिणामस्वरूप एक जगह कई मजदूरों की एक साथ जरूरत पड़ी और इस प्रकार कारखाना उत्पादन आरम्भ हुआ।

बुनाई के क्षेत्र में मशीनीकरण हुआ, वाष्प शक्ति से चलने वाले करघों का प्रचलन 1780 के दशक में हुआ। 1815 के नेपोलियन युद्ध के बाद इसका प्रयोग तेजी से बढ़ा। अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में ब्रिटेन के कपड़ा निर्यात में तेजी से वृद्धि हुई, जो 1815 के बाद के तीन दशकों में अपने उत्कर्ष पर पहुँच गई। उत्तर नेपोलियन दशकों में ब्रिटेन के कुल निर्यात में आधा हिस्सा कपड़े का होता था और 1830 के दशक में ब्रिटेन के कुल आयात में बीस प्रतिशत हिस्सा कपास का था। उसका भारत जैसे उपनिवेश के देशी उद्योग और कृषि समाज पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा। इसका अध्ययन हम आगे विस्तार से करेंगे।

नयी तकनीक के उपयोग से कपड़ा उद्योग के अलावा धातु उद्योग जैसे तांबे और इस्पात, उत्पादन, शीशा और कागज उद्योग में भी अभूतपूर्व विकास हुआ। 1770 के दशक में जेम्सवॉट द्वारा इंजन के आविष्कार से कई उद्योग और यातायात के साधनों में क्रांति आ गयी। जहाज में वाष्प शक्ति के उपयोग ने पानी से होने वाले यातायात में एक क्रांति ला दी। अंततः 1830 के दशक से रेलवे का जाल चारों तरफ फैलने लगा, जिससे स्थल यातायात में एक नये युग का जन्म हुआ।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन से संगठन में ढेर सारे परिवर्तन किए। तकनीकी विकास के फलस्वरूप घरेलू व्यवस्था का स्थान कारखाना व्यवस्था ने ले लिया। जैसा कि हम पढ़ चुके हैं, घरेलू व्यवस्था में कारीगर अपने घर बैठा अपने औजारों से काम करता था। वह व्यापारियों से अग्रिम राशि ले आता था और उत्पादन भी उन्हीं के लिए करता था। कारखाना व्यवस्था में कारखाने का मालिक मजदूरों की नियुक्ति करता था, मजदूरों के पास औजार और मशीन नहीं होते थे, उसे केवल मेहनत की मजदूरी मिलती थी। इससे एक औद्योगिक सर्वहारा का जन्म हुआ, एक ऐसा वर्ग जो मजदूरी पर अपना गुजारा करता

था। औजार, भूमि और मेहनत अब मजदूरों की मिल्कियत नहीं रह गयी और इन्हें छीने जाने का विरोध भी हुआ। बढ़ते हुए मशीनीकरण का भी विरोध हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में रोटियों के लिए दंगे हुए और मशीनों को तोड़ने की वारदातें हुई। 1830 के दशक के बाद मजदूरों के एक जगह काम करने के कारण मजदूर आंदोलन का भी जन्म हुआ।

मजदूर वर्ग के जन्म के साथ-साथ पूंजीपति वर्ग का बर्जुआ वर्ग भी परिपक्व होता गया। व्यापारियों और समृद्ध कारीगरों से पूंजीपति वर्ग का निर्माण हुआ। इन्होंने उद्योगों में पूंजी निवेशित की, मजदूरों का उपयोग किया और बाजार से मुनाफा कमाया। मुनाफे को पुन: निवेशित किया जाता था और प्रतियोगिता के कारण अच्छी तकनीक का इस्तेमाल किया जाता था और अच्छा माल बनाने की कोशिश की जाती थी। वाणिज्यवादी प्रक्रिया के कारण पूंजी काफी मात्रा में इकट्ठी हो गयी थी। 1820 और 1845 के दौरान कपड़ा उद्योग का उत्पादन चालीस प्रतिशत बढ़ गया था, जबकि इसकी मजदूरी में मात्र पाँच प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र से औद्योगिक क्षेत्र की ओर मजदूरों का स्थानांतरण हुआ। एक मोटा अनुमान यह है कि सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक लगभग अस्सी प्रतिशत जनता खेती में लगी थी। 1800 में यह प्रतिशत घटकर साठ रह गया और 1901 आते-आते कृषि क्षेत्र के मात्र 8.5% लोग संलग्न रह गये। एक दूसरा सूचकांक भी इसी प्रकार की सूचना देता है। 1750 के आसपास, कुल राष्ट्रीय आय का पैंतालीस प्रतिशत कृषि से प्राप्त होता था, 1851 में यह प्रतिशत घटकर बीस रह गया। इसका अर्थ यह नहीं है कि कृषि क्षेत्र में अवनति हुई बल्कि इससे यह पता चलता है कि तकनीकी विकास के कारण इस क्षेत्र में मजदूरों की आवश्यकता कम होती गयी। उद्योगों के विकास से शहरों का विकास भी तेजी से हुआ। लंदन शहर की जनसंख्या 1600 में दो लाख थी, 1800 में यह बढ़कर 10 लाख हो गयी। 1851 तक एक लाख से अधिक वाले शहरों की संख्या उनतीस हो गयी और 50,000 से ऊपर आबादी वाले शहरों में कुल ब्रिटिश जनसंख्या के एक तिहाई लोग रहते थे। शहर का जीवन कठिन और संघर्षपूर्ण था और लोगों को आम जरूरत की चीजें पर्याप्त रूप में नहीं मिल पाती थी। औद्योगिक क्रांति के दौरान आदमी, औरत और बच्चे के श्रम का निर्ममतापूर्वक शोषण किया गया। यह मजदूर वर्ग नारकीय जीवन बिताता था। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स ने अपने उपन्यासों (ओलिवर, डेविड कापरफिल्ड, निकोलस निकेलबाई, ग्रेट एक्सपेक्टेशंस आदि) में इस नाटकीय जीवन का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है।

6.12 औद्योगिक पूंजीवाद की ओर

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में वाणिज्यवादी युग पूंजीवादी युग में बदल रहा था। एडम स्मिथ ने 1776 में अपनी पुस्तक "द वेल्थ ऑफ नेशन्स" में वाणिज्यवादी विचारों पर करारा प्रहार किया था। पूंजीवादी आर्थिक क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप का विरोध कर रहे थे, हालाँकि विगत शताब्दियों में राज्य के समर्थन से ही वे तरक्की करते रहे थे। बढ़ते हुए पूंजीवादी उत्पादन के लिए मुक्त व्यापार और बाजार की आवश्यकता महसूस हुई। इस नये सिद्धांत को "लैसेजेफेयर" (Laissezfaire) के नाम से जाता है, जिसका मतलब होता है अहस्तक्षेप की नीति, कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक क्षेत्र में राज्य का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। मुक्त व्यापार की माँग और दबाव के कारण 1813 और 1833 के अधिनियमों के द्वारा पूरब के व्यापार पर ईस्ट इंडिया कम्पनी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया। 1832 के सुधार अधिनियम से ब्रिटिश समाज के धनी वर्ग को मताधिकार प्राप्त हुआ। इसके बाद बुर्जुआ वर्ग का राजनीतिक प्रभाव तेजी से बढ़ा।

एक बार ब्रिटेन के महत्वपूर्ण औद्योगिक पूंजीवादी विश्व शक्ति के रूप में स्थापित होने के बाद वाणिज्यवादी युग की नीतियाँ बिखर गयीं। नेविगेशन कानून ढीले किए गये और 1849 में उन्हें हटा दिया गया। ब्रिटिश मशीनरी और तकनीकी विशेषज्ञता के निर्यात पर लगा प्रतिबंध हटा दिया गया। अन्ततः मकई कानून (कार्न लॉ) हटा लिया गया। यह भूमिपतियों के प्रभाव की अवनति का द्योतक था। ब्रिटिश भूमिपतियों के कृषीय हितों को संरक्षण देने के लिए मकई कानून के अंतर्गत खाद्यन्न आयात को नियंत्रित किया गया था।

इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक लैसेजफेयर की जीत हो गयी और वाणिज्यवाद की जगह औद्योगिक युग की स्थापना हो गयी।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अन्य यूरोपीय देशों ने भी ब्रिटेन का अनुसरण किया, लेकिन सभी देशों के औद्योगीकरण की प्रक्रिया एक जैसी नहीं थी। पूरे महाद्वीप में औद्योगीकरण एक समान नहीं हुआ और पूर्वी यूरोप के अनेक देशों में सामंती मूल्य बरकरार रहे और 19वीं शताब्दी के अंत तक औद्योगिक-पूर्व संस्थाएँ कायम रहीं।

बोध प्रश्न 3

1) उन कारणों को समझायें जिनसे इंग्लैंड विश्व का प्रथम औद्योगिक राष्ट्र बना। 100 शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) राज्य नियंत्रित व्यापार पर औद्योगिक क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा? 50 शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित वक्तव्यों को पढ़ें और सही (✓) और गलत (✗) का निशान लगाएँ।
   - क) घेराबंदी आंदोलन के कारण बहुत से किसानों को अपनी भूमि छोड़नी पड़ी।
   - ख) जनसंख्या की बढ़ोतरी हमेशा देश के आर्थिक विकास में सहायक नहीं होती है।
   - ग) औद्योगिक क्रांति के दौरान ब्रिटिश कपड़ा उद्योग में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ।
   - घ) औद्योगिक क्रांति से सबसे ज्यादा फायदा कामगारों को हुआ।
   - ङ) लैसेजफेयर का अर्थ है कि आर्थिक मामले में राज्य हस्तक्षेप न करे।

6.13 सारांश

अब इस इकाई को हम समाप्त कर रहे हैं। आइए, चलते-चलते चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी के सामंती संकट के बाद से यूरोप की मुख्य प्रवृत्तियों पर एक बार फिर नजर दौड़ा लें। जहाँ पूर्वी यूरोप में दास प्रथा और सामंती शक्ति में वृद्धि हुई, वहीं पश्चिमी यूरोप में मजबूत राजाओं के नेतृत्व में राष्ट्रीयता पर आधारित राज्यों का उदय हुआ। भौगोलिक खोजें हुई, पारसमुद्रीय विस्तार और उपनिवेशीकरण हुआ। वाणिज्य और बाजार के विस्तार में क्रांति आने से व्यापारियों और मुद्रा अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ा। पुनर्जागरण, सुधार आंदोलन और नये विज्ञान के उदय ने मध्ययुगीन संस्कृति पर करारा प्रहार किया

और नये युग का आरंभ हुआ। इसके साथ-साथ यूरोपीय समाज और राज्य व्यवस्था की आंतरिक संरचना में परिवर्तन हुए बाजार अर्थव्यवस्था में बढ़ती भागीदारी के कारण विभिन्न देशों में प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गयी और प्रतिद्वंद्वी देश आपस में लड़ने-झगड़ने लगे। यह संघर्ष यूरोप तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे विश्व में छा गया। यूरोपीय देशों के बीच उपनिवेश बनाने की होड़ सी मच गयी। इस संघर्ष में ब्रिटेन सफलतम प्रतिद्वंद्वी के रूप में सामने आया, क्योंकि इसका समाज अन्य यूरोपीय देश से अधिक गतिशील था। इस देश में औद्योगिक क्रांति सबसे पहले हुई, जिसने वाणिज्यवादी युग की समाप्ति की घोषणा की और औद्योगिक पूंजीवाद के आगमन का उद्घोष किया।

आपको यह हमेशा याद रखना चाहिए कि वाणिज्यवाद से औद्योगिक पूंजीवाद की ओर बढ़ने के क्रम में अधीनस्थ उपनिवेश भी प्रभावित हुए। पूंजीवाद के उदय और विकास के साथ यूरोपीय देशों ने उपनिवेशों की खोज और उसके लिए संघर्ष जारी रखा। इसी प्रकार के उपनिवेशों में भारत का भी नाम आता है। भारत में यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों की भूमिका पर हम अगली इकाई में विचार करेंगे।

6.14 शब्दावली

औद्योगिक पूंजीवाद : ऐसी पूंजीवादी व्यवस्था, जिसमें पूंजी पर उद्योगपतियों का अधिकार हो।

जैक्वेयर : किसान विद्रोह

बुलियन : सोने या चाँदी का भंडार जिसका उपयोग अक्सर सिक्का बनाने के लिए किया जाता था।

मानवतावाद : एक विचारधारा जिसके अनुसार मनुष्य अपनी सोच के आधार पर काम कर सकता है।

वाणिज्यिक पूंजीवाद : ऐसी पूंजीवादी व्यवस्था, जिसमें पूंजी पर व्यापारियों का नियंत्रण हो।

व्यक्तिवाद : यह सिद्धांत आर्थिक और राजनीतिक मामलों में समुदाय या राज्य की अपेक्षा व्यक्ति की भूमिका पर बल देता है।

अकिसानीकरण : वह प्रक्रिया जिसमें किसान को अपनी जमीन छोड़कर जीवन यापन के अन्य साधनों पर निर्भर करना पड़ता था।

6.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 6.2
2) नये विचारों का उदय, केंद्रीयकृत राज्य का उदय, तकनीकी विकास आदि। देखें भाग 6.4
3) इस उत्तर में घेराबंदी आंदोलन और इसके परिणाम, कपड़ा उद्योग का विकास, राजनीतिक स्थायित्व; व्यापारियों की भूमिका आदि का जिक्र करें। देखें भाग 6.5
4) 1) क 2) ख

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 6.6
2) देखें भाग 6.6
3) इस उत्तर में आर्थिक मामलों में राज्य के हस्तक्षेप, आंतरिक व्यापार के विकास, बनी

बनायी वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध, विदेशी व्यापार पर नियंत्रण आदि को शामिल करें। देखें भाग 6.8

4) क) और ख) देखें भाग 6.8
   ग) देखें भाग 6.7

बोध प्रश्न 3

1) अपने उत्तर में आप कृषि में होने वाले परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि, बाजार की भूमिका, विज्ञान और तकनीकी विकास, राजनीतिक स्थायित्व आदि का जिक्र करें। देखें भाग 6.10

2) इस उत्तर में राज्य हस्तक्षेप की समाप्ति, मुक्त व्यापार की शुरुआत, पूंजीवादी उत्पादन के विस्तार आदि पर प्रकाश डालें। देखें भाग 6.1

3) क) ✓ ख) ✓ ग) × घ) × ङ) ✓